ASH IVES

1.626

ARCHIVES







सा।। [illegible] कार्ज्यया [illegible] म [illegible] मग्रह [illegible] नाञ्ज

या [illegible] थमदया [illegible] नागी [illegible] मननता [illegible]

ध्यय:।



१ निविघ्न [illegible] यां [illegible]

जे [illegible] दिवदूर सावाले [illegible]

[illegible] शाड्गू पदनी ॥

म[illegible]पति [illegible]



१ अर्थतालें [illegible] वं [illegible] वड

यंदधि भववा [illegible]

[illegible]प्राति ॥ चूड्गस्यद [illegible]

हली ॥ समन्त [illegible]

ख्फू॥ सिद्ध॥ मनसाहृदयू॥ गुरुसांप्रयू॥ सिद्धयम
यू॥ आगनास॥ सूरिविद्युयिव॥ ७ ॥



ए सोहाम्बं सं घेलोम्यस॥ आना
गेयूलक्षबद्धेनि॥ बाधिमर्दी
राद्धिमंग्ये॥ यक्षुवनुविनिदि
नेह्॥ वनुसा॥

॥ वेलुमा॥ रिष्ट॥ रागिक्षयू॥ समस्त वातदयू॥
नागनास॥ पूल्वपुद्धिक्षयू॥ व्याधिनासक्षयू॥ ॥



॥ सूर्य्यसादर्शनेता नैव॥ राजेवत्यानमवसंकर्म्मी रिष्ट॥
आदित्य दर्शनेक्षयू॥
क्षयी॥

१सूर्य्या॥हि... विशूय... ता... का३
सिद्धिशूय... नागनास शूय॥ ॥ ॥

१स्त...नर्दा...यव... वेना
वर्त्तनय...न४...र्थ... निलिवत
... ...गमननवनि...॥ ॥
गैठस्व॥

१ गँ ङस्वामदिङ॥ नागिस्यु॥ वब्वस्वयु॥ वनसा

स्यु॥ दिनप्रति धन पि हायिव॥ ॥



मेहत[illegible]नापि॥ म

काउविनात[illegible]ता[illegible]

[illegible]नेति॥ [illegible]नता[illegible]

कति॥ वटि॥

१२टि॥ मतिं॰॥ तयपदयू॰॥ धनमाय॰॥ कवदकाजेन
सङ्गयू॰॥ गीरुवल्लाय मालिं॥ ॥



१ विग्र हिहद्वयेदोम॰॥ कवहे
चापिद्दथ्यमाविकूईति धनो
व॰ डगद्रूप विनिद्धि(गेनु॥ ग
ना॥

१प्रनाामहिङ॥ ॐकुवलायमालिव॥ मेगाबन्न

नयू॥ धनमायिवा॥ ॥ ८



१सरुलिइ [illegible]गकार्या॥ [illegible]

कुवदर्गनी। मनठाकिसमाना

गा॥ ॐखवजूगागमवया॥

सिमा॥

सिमा॥ हिंढ॰ मननसावपाकाउ॰ सूहते ...
मनसक्काषशयू॰ मखदयू॰ चागमासं॥



... यीयीगाकंतस ...
चा॰ना॰दिहि४वियहूबे॰ ...
निवि॥ मषनूयविनिद्धिमे ...
रूसि॥

रुसि॥ मतिद्ध॥ तयदयू, वाग।२।यू।...
ड्यू, उद्ध्वानि तय, ...याच्चायमालिव...



...वववसूलाई ...
...समागम४। ...रवम
...ध ...नउविनिद्धि गोनू
॥वक॥

२ वकृ ॥ तिढ ॥ मारुदयू ‚ उमिलाल्यु ‚ वान
थयसवृद्धि मानइयू ‚‚ दिनपुर्ति गुरु हृदयि ॥



२ श्री ॐ विघ्नेश्वर हृदय ख ष्टि ‚‚ नि
वाद्यकनहस्तथा । उवाद न
नेरूला द्वेव ‚‚ हृदय हृ ख
नवा ॥ उमूनिशोढा ॥ ॥

ङम्नूनिद्धड॥ मतिङ॥ याङाकाङ विघ्निहृयू॥
हृ४खदयू॥ विवादहृयू॥ ल्वायमालिव॥ लूंग्वडस
हृ४खदयू॥ ॥



द्य[illegible]हिस्यषङ्ग्य[illegible] [illegible]नका
चलच्यनतयसूखंधः नत्व[illegible]
दथ्वि॥ गोनलछेबिवहूंथ्यगा॥
गोनदे॥ ॥

२ मे नल ॥ ह्रि ड॰ तामाय॰ नाज्ञान मा[illegible]यया [illegible] ह॰

[illegible]यद्य॰ धनलाहदय ॥ ॥

१२



क्रेनहा हानिम्ह[illegible] वहद

१ खेप्रडायनन ह्मनत्रछै नहा:

नि[illegible]॰ नम्र म्रीकृपदर्भ्मै ॥

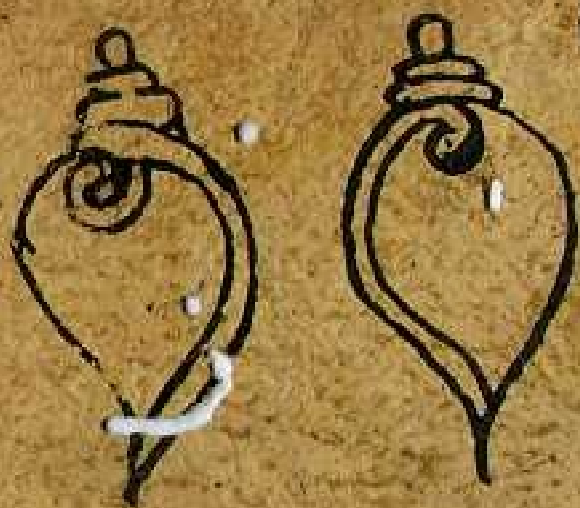
पविविमिला ॥ ॥

पाविनिमिसा॥मति ढा॥ लाय मालिव॥ तंदिदयू॥ फ
रुवे॥ ऋूतिद्दखहृयू॥ थनजुङ हृयू॥



मूभीदस्थजुकेल्यादे॥ स
ह दथ्वसमागमी। धनदरि
थ्वसहमी॥ सूनतीपूर्थ्यंदसे
॥नसाकलान॥ ॥

नसाकस्वान॥ तिंहः तास्वायू॥ सूहतिदयू॥ धनवृद्धि
मोदहयू॥ भागनासहुंगि॥ ॥ २१



१ सर्व्वकार्य्य हत्मनिहीः सर्द्धै म
गलकानक॥ धन धान्य श्रे स्वार्थ
श्रीः ३ं रिवयूभवि॥ निहिं॥
नु॥ ३ं रिव॥

१ गरिष्ठ॰॥ तिद॰ दिनप्रति कार्यसिद्धिस्य॰ सुसंग
लक्ष्य॰ धन॰ वा॰ कु॰ धर्मलाभदयं॰॥ ॥ १८



१ पश्यहं सर्वहानिश्च॰ दुःख
क्लेशभयानश्च विवादावि
धकाल॰ गदहं वेवदर्शनं॥
गरु॥ ॥

१गाढ़॥मति द॥ समम्रुकाउँसि॥ हानिग्र
दरथयू॥ कवसनपिकुनपिवानानावचनदि
दहयू॥ ॥



२धनधान्यानिसिप्राप्य॥न
जासदा हवतूलहनसर्वे
र्योनी॥ मकलेवेवदर्शनं॥
हिकिमगन॥ ०

हितिमगत॥ति ठ॥ धन॥ भन्यनाह दयू॥ वाङ॥
न्य॥ चू॥ चकोङि या नेमनाँसि द्धि ह यिव॥ १८



२ निह्लु लीसत यँचेव॥ धन॥
नित थेवव ा ङ नी नस्य त व॥
॥ खर्ह्म ठ कद्र्गनाम्॥ ॥
खर्ह्म॥ स यिठ॥ ॥

१ स्वर्ङे॥ सयिद्व॥ मरिह॥ थ्वा काउँयाग सना॥ निह्ल
हृदय्यू॥ धनमायू॥ थागी हृयिव॥

१२



१ भ्राचागं वेवसूरवंपे॥ ...
सम्याहिदायकै॥ विघ्नानिसथेक
यीनां॥ नोकया मवेवदर्शने॥
नाम॥ ॥

॥नोम॥ हिंढ॥ नागनासू॥ सूरवदयू॥ हम्मी वद्धि
ऌ॥ याछावाकाउं सिद्धि हु यिव॥ ~७ ॥ ॥

२७

॥नो ऊहयीमहाधार्ने॥ भनश्चन्न
वह्ननिकं। स्वर्णचवपामि क्रुग्नं
श्राप्रूकनविनिद्धिलत्॥ हू ॥



२खूं ॥ मतिङु चाङ ह्ययंदयू घन श्रम्व मायू
सिक्रदयू श्रागीङ्यू ॥ ॥ २७



२बियालाहथं मेन्ववर्यी सह ॥
छिकलेपर्नी सर्वेमंगसली दु
हंसक्रूपयू दर्शनी ॥ हंस ॥ ॥

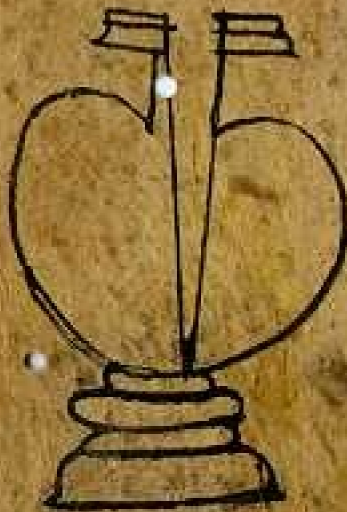
॥ हंस ॥ हिद ॥ वियास यिव ॥ ॐ...न्यनहयिव ॥ समस्त
कार्य सिद्धिहयिव ॥ समस्त मंगलहयिव ॥ ~१ ॥



॥ डष्टनहस्यायस्य ॥ [illegible]
हानिग्यनिलसवेवा [illegible] व [illegible]
[illegible] ॥ डष्टस्यव निदर्गनै ॥ ॥
डव ॥ ॥

१ङन॥ महिद्द॥ किर्हिनास॥ भागीहयू॥ नवसन्दि
उस्तपिव॥ ॥

२३



१ कूर्थना॥ ओमुनस्थापॅ॥ श्रम
हंगतथेववरवेनागेकनह
न्वैव॥ हयकूम्ह नि दर्गनात
॥ ऋकग्वनया॥ ॥

१ राय क्रम्ह ॥ म हिरु॥ धन नास॥ मन स साकसन्तोउ

दस्यू॥ स्ह नेहिंग झ्यू॥ भागीझ्यू॥ त्वायमालिव ॥

२१



१ नाउसम्याह्नि कैं स्याहै॥ सा

कैं स न्काष दाम कैं नाउ मानि

झ्य न्वैव॥ जेनावतख दनी

नाह्र॥ किसि ॥ ॥

१किसि॥ सिद्ध॥ वोरमानदयू॥ सर्म्वोहिदयू॥ श्री
म्बायू॥ सुखदयू॥ सनुक्रुहयू॥ उमदयू॥ ॥

॥ ५९

५१



१श्रीकलीसर्व्वकार्य्यानि॥ सर्व्वम
यहिदायकंत सर्व्वकार्य्यत्यं सि
द्धि॥ सिंहरूपबुदर्गनातू॥॥॥
सिंह॥ ॥

॰सिंह॥ तिढ तन्त्रीदयू॥ काउंसिद्धिहयू॥ सर्वं
दयू॥ समस्त काउंसिद्धिहयिव॥ २६



॰व्याघ्रवोनप्रकृपत्थ्य॥ मृ
वेवनसीसयतः काउंनास
वेघ्रग्य॥ कानकृपनहस्था॥
कान॥

धकाव॥मतिद्द॥ धूयातय॥ षूँयात यदयू॥ सिकद

यू॥याढाकाऊँनास॥ विघ्रिदयू॥ ॥



१द्विऊस्यदन्यतऊस्य॥ दऊना

न्निनसँसयतू१सब्रैमाढ्कनी

विया॥ धनतातध्येलख्वता॥ ॥

ब्राह्मन॥

१ब्राह्मण॥ तिष्ठ॥ समस्तं आक्रियायेव॥ मनसा
नेताव याका ॐ सिद्धिरस्तु॥ विद्यामस्तु॥

॥

५



१ वस्त्रागन्धसन्तापे॥ ...
नित्यैवच॥ विनाशकनह
स्येव॥ अनन्तपनदर्शनात्॥
शिवा॥

१खिवा॥मतिह॰ क्षमिषाग नपिक्तलपिव॰ सन्कापह
सू॰ याष्टाकाङ्गेनासहयू॰ मतवववस्तुनयू॰॥ ॥ २



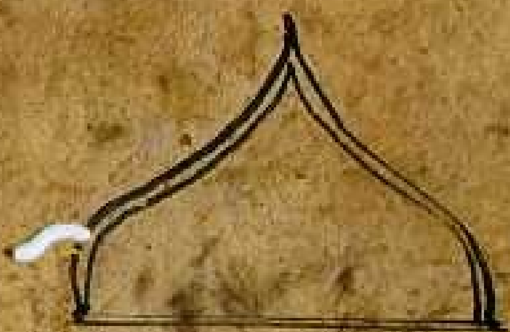
१श्रीप्रभवतंवंखं॰ लीलाहि
६॰ भवव। सर्व्वकार्य्यानिसिद्धं
कै॰ हर्द्धिवूपनदर्शनात्॥ ॥
ऋथ॥ ॥ ~१८ ॥

१ ख्याथं॥ तिद्‌, मीलाहदयू॥ थनलाहदयू॥ सम
रुकाउँ सिद्धिइयिव॥ ॥ ॥



१ ह्मनत्र ध्रूग्यं २४ रवधर॥
लोक सनक्रापकान कींहनीव
नदीन्यैव॥ घठ ध्रुमस्यद्दय
न॥ ॥ग्यनर्दै॥ रवस॥

१ ग्वनर्पा । ख्वसु ॥ महिद ॥ ख्मनजुक्रह्यसू ॥ इख्वद ।
साकसक्रापहय ॥ तयदयू । सिकदयू ॥



१ निर्व्विघ्नं सर्व्वकार्येषु । या येन
दैसमर्व्विनं । कतलारज्ञ्यसेट ।
श्रुं । ननकूपञ्यदर्शनातु ॥
नत ॥ ॥

२वन्ह्रा॥ ल्हिद॥ छ्वाकाऊंयाकस नां॥ धनलाहदयु॥ इ

मीलाहदयु॥ सिद्धलुंइयु॥ ~ ॥ ॥



२मनं वापिसंभा॥ पूत [illegible]

पिधनकया। वस्तुनासिवपि [illegible]

नासि॥ छ्वंछ्वं दयांनिदंगो॥

चिछुं॥ ॥

१ विद्धु ॥ मतिरु॥ सियू॥ मायामाहरयू॥ पूतविना
ग॥ धनमायिव॥ वस्रु नासहयू॥ गतिवल्लायमालि
व॥ ॥



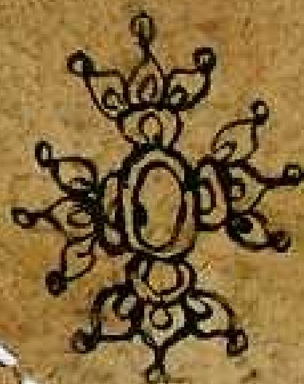
१ हेव स्कानंदु व्यलार थ॥ के
स्याल प्रितिवर्द्धनी॥ मित्र...
थ्य सिद्धि॥ प्रदीपन विनिद्धि
नत॥ भतं॥

१मनी॥ हिक्ष॥ खाडाथयस॥ धनलाहदयू॥ नाद्वायू॥
लोतव छितिदयू॥ मितुलाहदयू॥ खाडाकार्जसिद्धि॥



१वह धनविनास थ्वॅ॥ भोर्दृव
वपुवर्दैर्ग। सकार्य्यां थैवा[illegible]
न्के॥ मदिखसथवदसथना॥ ॥
भस॥ ॥

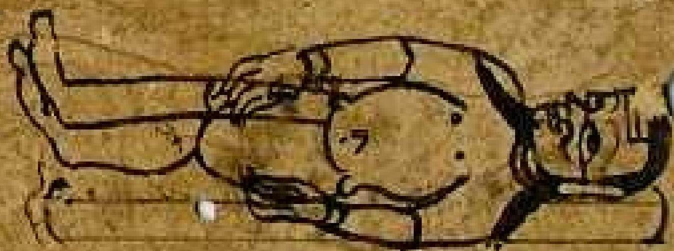
॰मस॥ महिंद॥ शूद्रिकधननासह्यू॥ गक्रुवादलपि
व। हिंदकार्ज्यालस नां मसिव्यपिव॥ ॥ ३१



॰निर्व्विर्नंसर्व्वकार्य्येषु॥ स्वं
तवाति निर्व्विघ्नं। तागी॥ वनद
नामश्च॥ वज्रल्वै वरुद॥ नं॥
॥वज्र॥ ॥ १ ॥

स्वक्रा॥ दिद॥ भ्नुकाउ नानसनी॥ सिद्धि हृयिव निग्व

य॥ भु खिहृयिव॥ लागदयू॥ बोग नकुनासहृयू॥ ॥ ३३



रवि ग्रहदेवार्थनासथं॥ कव

लाभाग ववना दू ४ खधं॥

यनिथं॥ मतकनेवदं॥ सो

॥ सिका॥ ७ ॥

९सिका॥मलिङ॥ ख्वायमालिव॥ धननासहयिक॥ [illegible]

हयिव॥ दिनप्रतिङ रवहयिव॥



९गतस्यागम[illegible]यस्य॥ काऊे [illegible]

शिद्धिनक्रायत॥ कनह [illegible]

नेवेक॥ बानवस्यानिदर्गो [illegible]

॥ ॥माकव॥ ॥

मोकनंमाहेछ॥ [illegible]वदस[illegible]मनयाय मा दि[illegible]॥
याछाकार्गमसि [illegible] मा हि क॥ [illegible]
यू॥ ॥

॥लमहाग्धेपूर्तनांतलय॥ मि[illegible]
तुहयेवतुसेगति॥लिर्छ लि[illegible]
कार्योनि॥ निधिना वेवदर्गे॥
॥पवा॥

१ पना॥ति॰ तोगी ड्यिव॰ पूतलावदयू॰ [illegible]
दयू॰ मि३दयू॰ समस्त कार्ज्य सिद्धि ड्यिव॥



१ म्रों था॰ दि॰ जथ थें॰ [illegible]
तोवलवा॰ गमी॰ कलेवछि॰
मर्छु रूपषृ दर्शनी॥
ऊँ॰ न क्षौ॥

१८ोनक्षी॥ तिद॥ नागनामसहयिव॥ स्तीनार
दयू॥ धनदयू॥ कुलव ध्विमानहयू॥ जसदयू
॥ ॥

१ भूथेलाहं गुणं लाधं॥ उसंनी
ममथेववदीघायूध्यायिनाः
श्री नदीरूपवदगनाप्र॥
स्व॥ ॥

ख ॥ हिङ ॥ धनलाभदयू ॥ गुलादयू ॥ सुख
दयू ॥ मान्वायू ॥ भागनासहयू ॥ ० ॥



नकूँकुञाहाँहृं ॥ कौथीन
ह्नंन सिद्धिति । गूनिमितनि
नालकं ॥ वियतिमनूगङ्गति
॥ नकूत ॥ ॥

र्नेवचा॥ महीं॰ याछाकाउमसिधू॥ विप
णिह्यू॥ ॥



देक्षगहः॰पगसर्वे॥ निर्व्वी
निधनेतवत्॥ गागःप्येववः
हुश्वै॥ अग्निरूपश्चेदनी ॥
अग्निकुण्ड॥

श्रुमिकु॥ मतिठ॥ धनमायू॥ बतसवश्रनइ
यू॥ नागीहयू॥ श्रुतिइरवशयिव॥ ॥ ॥ १९



१धनवश्रपविक्रु॥ स्रघ
नै॥ नूनीतवन॥ नीनब
तयैवैक॥ ह्योनूपन
हथता॥ गनूता॥ ॥

१ ॥ श्रीत ॥ मतिछ॰ धनमायू॰ भागीहायू॰ दाति
उहायू॰ महाहयदयू॥ ॥

११



१ नाङ्ह्वालहयीनयप॰ निवा
छ्वैवमहाहयाधनमान्याप
चीक्रंगौ॰ निवावदर्मैनगु॥
॥ श्रीं॥

१ ध्वन॥ ॥महिद्र॥ नाऊलयदद्र॥ धनधान्य नार

भागीरूपिव॥ ॥

६१



थअमलाह थै पूजाध्व॥ पू

गलाकृत थेववा॥ सर्वबा

डय थव॥ ऊउलक्ष्मीविनि

ोन॥ लक्ष्मी॥ ॥

ल्लक्षी॥ हिद॥ गमदयू॥ प्रसादरवनिव॥ पूतद
यू॥ काउँसिद्धिइयिव॥ ॥



रविपवँ पुतलाराक्षर॥ थान
मथँ॥ मछिता प्रसाद काउँ
स्रस्कधर॥ कन्याकूप॥ बंदनी
॥ कन्या॥

१कन्या॥ शि॰ पूर्वद [illegible] धाय धंमदय
प्रसादखनिव॰ स्त्री॰ संधि शयिनः॥ ॥ ६९



१खेवस्तु नमत भकः॰ द
दयथैवथाकूल। सर्वकार्य
किनासर्थ॰ किनातयुद्धि द
र्गनी॥ किनातयुद्धं॥ ॥

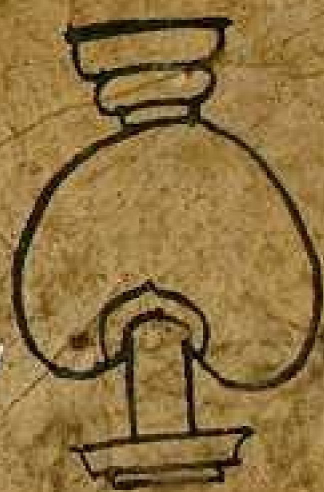
१किनाकयूह्वि॥मर्हिदु॥ शक्रुवल्वायमालिव॥लु
वतसरुखदयू॥कोर्डनासहपिव॥
॥

२८



धनाजरुजामः०॥ श्रयर्थ। सव
कमेज्ञयकुवी।सुनार्हम।ला
हथ॥वाद ˜ नेवदर्मनि ४॥
तक्क ॥ ˜ ॥

१ खाङ्क ना॥ तिड॰ नाङा मान्यदयू॰ ००॰४ व रह
यू॰ थागनासरुयू ङसदयू॰ स्रीदयू॰ थनदमू॥
७८



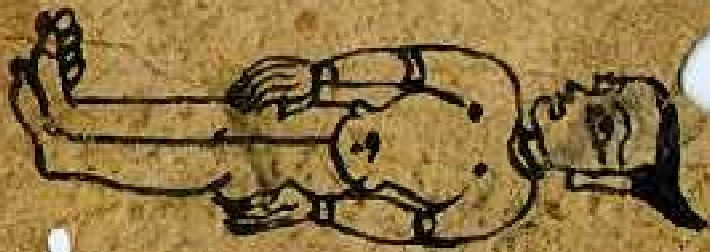
१ ग्रू थेनासमन ह्मापी॰ थन
ह्न्मात थेववा ह्वेनाल ब्न
हु थ्ये व॰ ग्रू वोक्नू ह्मनदगोनं
॥ ग्रू वोक्नू ह्म॥ ॥

१ मू(थो कूम्ह ॥ म हिं द॥ धन ह्रूयू॥ सन्कापहृयू
धानवानन॥ घागीहृयू॥ कन ह हृयिव ॥ ॥ १०



१ म्तुीलाहि धनलारुन्थ॥ [illegible]ी
यवधूसमामर्मी [illegible] धान्द
तम्चधिथ॥ मिवं [illegible] [illegible]प
नैनी॥ डमाम हृथवन॥ ॥

ऽउमामहन्वव॥हिठ॰ स्त्रीदयू॰ धनदयू॰ गोति
वृदयू॰ सस्यवादलपिव॰॥ ७ ॥



स्तयेब्याधिगोहिनस्यु॰ द्रा
स्वकुगंस्यस स्क्वी।स्रजुनावि
गर्हदेवेव॰ वतानविनिदग
नाहु॥वनात॥
॥

थबाल॥मतिद॥ तयदय॥ भागीहंयिव॥ इरवह

गकुवल्लायमालिव॥ ॥

३९



सुर्ख वेव मूलातथा॥

नवछिसमागमी॥ सूर्यतव

नेनिर्यव॥ वक्रनउविनि

दि(नेत॥ वक्र॥

॥ वेक्वा॥ तिह॥ सुखन्यू॥ जुमिलाराद्यू॥ थनलाग
सुखिरुपिव॥ ॥

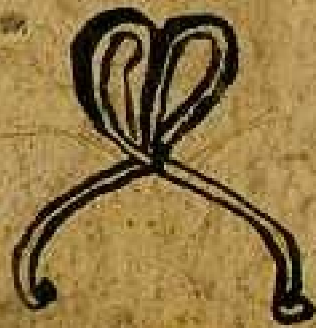
१५



॥ सर्व्व कार्य्य थू सियाव॥ सु
खसम्पत्ति दयकेँ॥ मिपू नि
लेर॥ कार्य्य॥ वन्दु॥ लाँदन
नेरवक॥ वन्दुना॥ ॥

श्व नूल॥ हिट॥ काज सिद्धि हयू॥ सुख॥ सम्पत्ति दयू॥
धनलाभ दयू॥ ॥

ग १



१ अगुगु क्षि नाबापि॥ अ
भ्यानि व हि दु खाम्स संमित
भामहा ल्वेवं॥ नं दा का अवि
नासनी॥ नागपाश॥ ॥

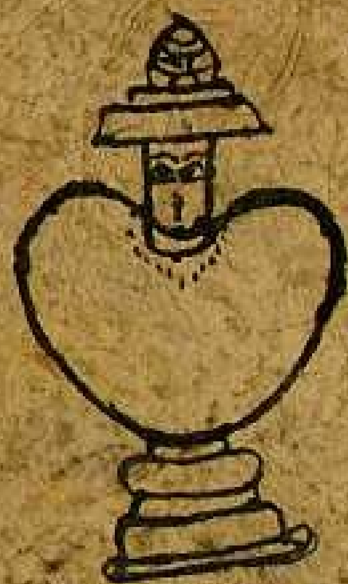
२ नागपास ॥ मति ४ ॥ श्लोकार्ड याक सनी ॥ मास्व ॥ रु
स्वदच्य ॥ ॥ ॥

२८



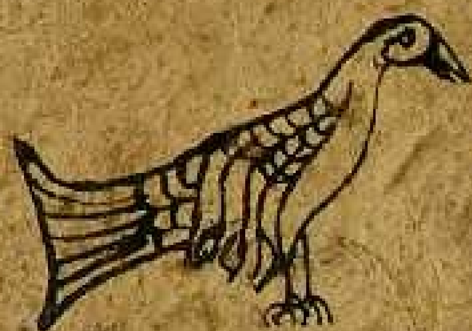
२ श्लोग्नि ह्वीनाकाडें दानि ॥
प्रवास गमनस्य ॥ श्लोग्नि
सन्तापीनीकुर्याति ॥ कार्यसि
द्धिनहश्यगो ॥ श्लोत्काव ॥

ग्लृप्रिन्वाला॥ मति ६॥ यो ढाकाजि नासहृस्यि दं॥
पुवास वनमालिव॥ महायदय॥ सक्वापहृस्य॥ ॥ १६



सिंपटुकलसिंदक्कु॥ धा
ललाताथेसिं हदे॥ सदेवाधे
वम्हिलाताधे॥ कवसिंपटु
सेहवा॥ सिंदकुकलस॥ ॥

॥ सीदर्हुकनस॥ तिद॥ थानदयू॥ लाहदयू॥ धंन
दयू॥ सुरवदयू॥ ग्रुदयू॥॥ ७ ॥ ॥ ७१



॥ कार्यबुसतगोह्र ४स्री॥ सीपा
र्थकाईनासनी। वहूसाकर
वास्य॥ काकदूयनहुस्यगा॥॥
कारव॥

कोख ॥ सहितदः॥ सताङ्कि ताकाउ या [illegible]
कृताभसिद्धं [illegible] दयू॥ सोकस [illegible] पः यूः ॥



सेवैताह्मगाउउ [illegible] ॥ वे
वउथ्यावह्र। कन्यार्थ [illegible]
थे। प्रासादत्वैव [illegible] ॥
ॐ॥

॥ हूँ ॥ सिद्ध॥ गजिवनृदयू॥ कन्यादयू॥ धनद
यू॥ पुत्रदयू॥ ॥ ॥ १९



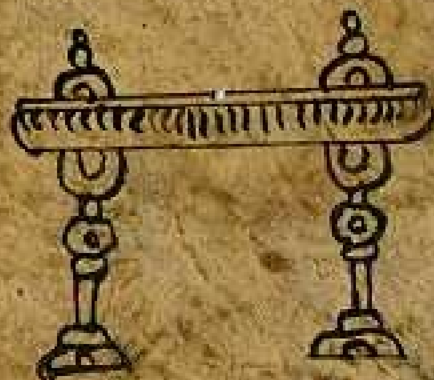
॥ सर्व्वकार्यार्थसिद्धि ज्ञाय॥ पुत्र
मित्रधुदायकं। कन्यालाभं ॥
लाभंच॥ हयवृषधनदस्य ॥॥
सर्वं॥ ॥

सर्वप्रतिष्ठ॥ समस्तकार्ज्य सिद्धिदय्‌यू॥ पुत्रला
भदय्‌यू॥ मित्रदय्‌यू॥ कन्यालाभदय्‌यू॥ लागदय्‌यू॥ ॥



ख्यापुलहं ध्वनयत॥ तन
वेनागमवचन॥ मनदयेव
तस्यव॥ व्याघ्रस्वपनदय्‌यू॥
॥ धू ॥

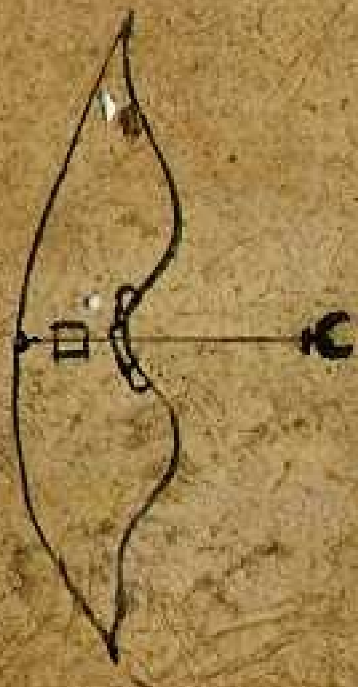
१ध्रू॥मति क॥ नागीशयिव॥ सिधू॥ ॥



२ नौख्य यविङ ताम्वैव॥ वनमा
न्यसमागमि कल्याणसर्वसिय
द्धि॥ स्वामानूपस्य दर्शनात्॥
स्वाता॥ ॥

स्त्वाता॥ हिङ॥ ॐ स्वनरशयिव विजयशयिव॥
धन॥ वांझुं॥ रुहोवयिव॥ तामवाय॥ संपर्हिदयू॥

52



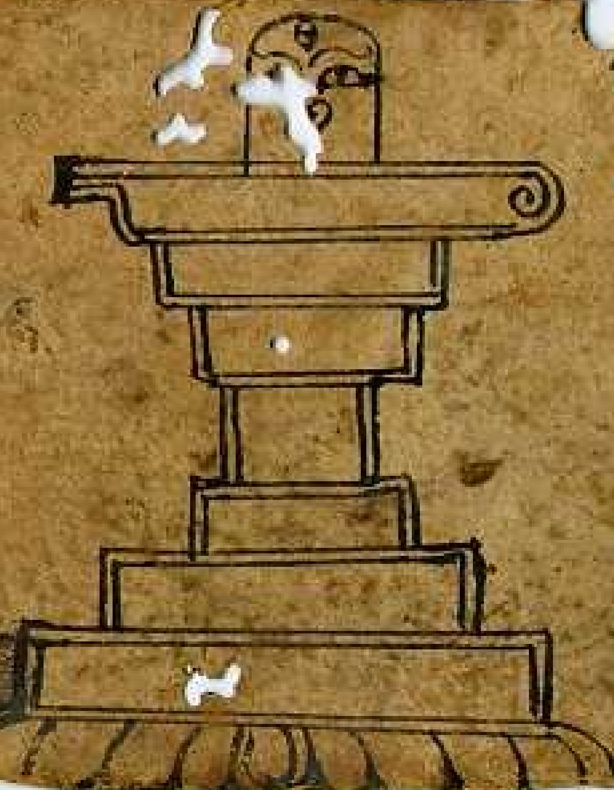
रविगुहिकनहि नागं॥ सकाप
तयमववा। विनाधनेव
निंथ॥ धनूर्बोदा नहस्यन॥
विपावला॥

लिपावला॥ मतिढ, त्वोयमालिव, वागीह्रयू,
सन्तापह्रयू, ह्रयेदयू, मगंववमुनयू, तंढदयू॥ ५२



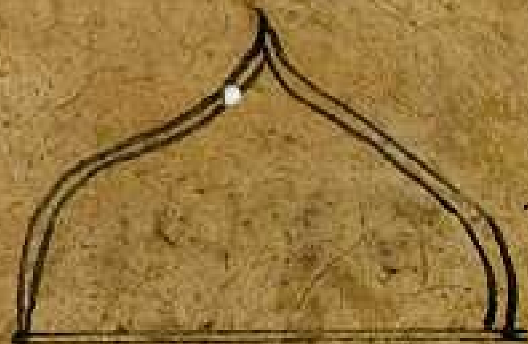
पविलायपविकूनं॥ १ सकंकं
ष्कंविलासनं। नकूलि कं नं
स्येवं, कापालिक दर्शना
॥ कापालिक॥

१कापालिका॥मति॥ साकसक्त्वापदयू॥ नामं
शयू॥ समस्तका ॐ नासशयू॥ नकुवल्वायमाल
व॥ ७ ॥



१लक्ष्मीलातन्वसियर्णु॥ स र्वका
ॐसमर्ड्ठ यत्।मूर्त्ति नैतमम
आतिजिनरूपपूर्ह्स्यत॥ ॥
जिव॥ ॥

॥ शिवा॥ सि ६ लक्ष्मीलाहदयू॥ सैपर्किदयू॥
समसकाउँ सिहयू॥ सूक्षिहयू॥ भागनासह
यू॥



॥ सौभाग्यं पूतलाहयं॥ मि
तुलेव समागमं॥ हिपाप [illegible]
कार्यथू॥ नत्तरूपन्यंदर्शना
॥ नवा॥

रवन्न॥ हिङ॰ वागी ह्यपिव॰॥ यूतदयू॰ मितब्य
या हा काङ सिद्धि ह्यपिव॥ ~ ॥ ॥



रकाल भाहि महाघाना॰ विवा
दं कलहं क्षवं डढ्ढिंग मसवं
लोव॰ वानाहा न्हूपकथ्यना॥
हा॥ ॥

र्ह्ना॥ मतिङ॥ विघ्निदयू॥ ल्वाय मातिव॥ दमार्ह
ह्यिव॥

६१



र्ह्वनलाहिं ङ॥ यल्येक॥ मितन
मसमागमं। धनलाहथ कां र्थ
था॥ लानूमा॥ग विनगनं॥ ॥
यर्ब्वग॥ ॥

᠁ पच्छित॥ हि ङ॰ थ्वो छाथ्यय सलात दयू॰ ङस
दयू॰ मिजु दयू॰ थ्वामनास धन दयू॰ कौ ङद
यू॥ ॥



᠁ थ्वसनेमूर्यनास थ्व॰ निवा
कं दमहल हयेर दथेचाविस
दानिलौ॰ मगरूप वि निदिल
तू॥ वचा॥

॥ खवा॥ मखिङ॥ थनना स॥ लख्यदय॥ नो:
नीहायेव॥ ॥

७२



॥ म्ही न्ह्यक्व ङा हेङ ॥ ...
तैंया वि पिलि तैं: यदि ने खि ...
लहन कार्य ॥ वह विघ्न न्ह्यक्वः
यत ॥ ज्व धूनि ॥ ॥

उत मूनि ॥ मतिङ ॥ इतिकुशयू ॥ नागव्याधि
दयू ॥ श्लो कार्ज्यात्तसमा ॥ विघ्नतयदयू ॥ ॥ १८



ॐ नयो विजयाभ्यैव
नधान्यसमागमं कल्याणं:
कार्य्यसिद्धि श्री ॥ मृदंगवे
वदर्गनाम ॥ रवि ॥ ॥

॥ स्वि ॥ तिद ॥ ॐ स्वन ह्यू ॥ विजय ह्यू ॥ धन
धान्य ह्यू ॥ ताम्बायू ॥ कार्जसिद्धि ह्यू ॥ ॥



॰ मरणं निरुमं वेव । श्रूयं हानी
निर्धिकार्यप्रवास मृत्युलाग:
ये ॥ ठनरूपा विनिदि ।ग नू ॥
ठगाक ॥ ॥ १ ॥

१ङनाक॥ मतिद्व॥ सिकदय॥ दगान्द मद्दायमा
तिव॥ धनह्रु यिव॥ ज्ञानह्नानहृयू॥ नागीहृयू॥
१२



१ धनधान्यै सुखैप्राप्तै॥ न्हेप
पूजासदाहवनु। नहनसर्वे
कार्येषु॥ पञ्चनवप्रकासितं
॥ पञ्चदान॥ ॥

॥ पं न्यस्थान दर्शन॥ तिरु॥ धनदयू समृदयू॥
शुखि ह्युयू॥ बाजार्थमा न्ययायू॥ ज्ञाकाडि
विन्कनयवमनां सिद्धि ह्रायिव॥ ~ ॥ १२



॥ तनतस र्बेकार्यषू॥ नप
पूजासफलवतु॥ नित्यैडय
ममाप्नाति॥ शकुदर्शन भव
वा॥ ॐ॥ ॥

१०० न्तु॥ हि ह, याडाकाउं स्ति ह्मि ह्यू, नाजान
मान्ययायू, दिनथुर्त्ति, ङसदयू,॥ ॥

७१



१म ख्रु ते थन सि यहा, उङ्कं
गनित्य द्दस्थनं महाशाकन
द्दस्यर्कं, नाद्द दैयनद्दस्थ॥
नाद्द॥

जोह्॥मविह्,, सियू,, चागीह्यू,, साकन
कयू,,॥ ॥ १२





ख्मेदनयाथिसामाह्,, यूरु
सोर्य्यकूलकयीवकुदाह्
विहकयं,,विचिकनेवद
र्गनं॥विव॥ ॥

१विर्क्क॥ ॥ रू ॥ त्रिषहयदयू ॥ पूतनासहयू
क्लनस्रूरू ॥ ॥व मूमननयू ॥ ग्रन्नमायू॥ ॥

७१



१कल्यालविजयग्नेवं ॥ म
मितासुहमागमीक्रूर्यलो
तग ननुरू ॥ ननसिद्दस्यप
नेर्त॥ननसिंह॥ ॥

१ नवमिं ॥ तिरु॥ ताम्बायू॥ विजयङ्गयू॥ मित्र
दयू॥ धनदयू॥ सं क्राबिङ्गयू॥ ॥ ११



१ कलहं ॥ अकस्मात्पी॥ वद्ध
मानइ ४ रवमवच॥ प्राणहानि
विद ४ श्र॥ दिगम्बनसपदनं
नं॥ दिगम्बर॥ ॥

॥ दिनम्चव॥ मतिङ ॥ लायमालिव ॥ साकसन्ता
पद्मयू ॥ उखदयू ॥ सिकदयू ॥ वषनयय्यू॥ ॥

१९



॥ सिद्धिन्ति सर्व्वकार्य्याणि ॥ तु
ष्प्राप्तिमानव ॥ विपूनाना
गमाप्नोति ॥ वागेश्वरी स्वेद
मेनाद्य ॥ वागेश्वरीदेवी ॥

॰ वागेश्वरी ॥ तिथि॥ समस्तकार्य्यसिद्धिदायक॥ स
मस्तीतिनिव॥ धनदायक॥ लाभदायक॥ ॥



॰ अर्थनासितव ग्रैव॥ विना
धैव द्वितिसद्दा आपद्ब्रमद
ग्रैव॥ कूर्क्कष्ठयूद्धिवल
गीगाल्वालाक॥ ॥

१ खाल्वाक॥ धनमायिव॥ तयदयू॥ मत्तिद्रखे
द्धनमाविव॥ वियातिहुयू॥ सिकदयिव॥ १०



१ षिप्रभवतधसर्व्वे॥ म्रीला
त धनमागतै। कार्य्यानि ह
वे सिद्धन्ति॥ डीनुपूनजल
दर्शनं॥ क्रथ॥ ॥

१ अथ॥ हिंड॥ यात्राकार्य्यसिद्धिश्यू॥ कुशला
रदयू॥ धंनदयू॥ समस्तसिद्धिशयिव॥ ॥ ८१



२ अर्थलाभि शु स्वँचव॥ स्थान:
लाभ स्व नयन। अनाम्थ कार्य
सिद्धि थ्य॥ कपिलागमहिंद नें
॥सियस॥ ॥

१सियसा॥ तिरु॥ धनलाभदयु॥ सुखदयु॥ भाइ
धायसलाभदयु॥ शागनासदयु॥ कार्ज्यसिद्धिदयु॥ ८३



१ पहरु नागहयँ व्यावि॥ धन
हानि रोधिवय। गनीवसु
कुश॥ खड्गवज्रनदस्य॥ ॥
खड्ग॥ वज्र॥ ॥ ~१ ॥

१ स्वर्ग॥ व कु॥ मति॥ मरु त्यदयू॥ नागी ह्यू
धननास ह्यू॥ कुमान पिकु नपिव॥

५॥



१ धर्म थ्व उ थ्वलात थ्व॥ थ्व
नसम्मान मवव। उद्भिं म धन
लात थ्व॥ विमान वैव दं नी॥
विमान॥

१ विमान॥ हिठ॥ दस्मिदयू॥ धनलातदयू॥ स्मन
लातदयू॥ दितप्राप्ति धनइ विचिव॥ ॥

८६

१ कपूवाक्नन॥ म हिठ॥ लोयमालिव॥ यायिनपि
उलापिव॥ साकसन्कापरत्यू॥ याडाकार्ज्मसिधू॥

८७



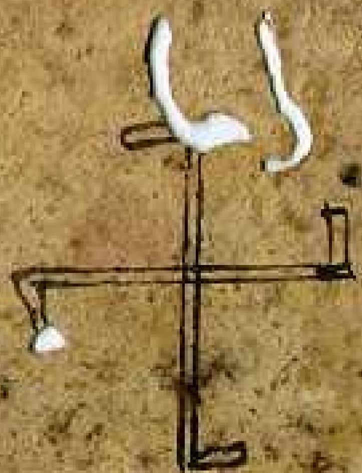
रथ्यू ष्ठि ब्याधितयँ घावँ ६ साव
सन्तापकालवँ। कार्यवैवन:
षिद्धोनि॥ कष्टवाक्कलनर्गना
तू॥ हाकुवाक्कन॥ ॥



रविविर्धकनह चैव॥ गुरुर्न
वमतित्र में। मैत्रमनयपोग
नि॥ गविवैवनिदर्शनि॥ साव
मि॥

ऽ गौरुवल्वायमालिव॰ भागीश्यू॰ ॥ अकद
यू॰ संअमनयदयू॥ सावमि॥ ॥

८९



ऽसमद्धिशानसंपत्तिः कार्य
सिद्धिप्रजायते। गमर्णयह
तैवैव॰ उदासस्वस्तिकहस्पता॥
स्वस्तिक॥ ॥ ॥

॥ खड्गिका ॥ लिङ्ग ॥ ज्ञाकार्य्य विन्कनपत्रसनी॥ सि
द्धिरायिव॥ समन्यलिंदयं॥ ज्ञाकारौ सिद्धि॥ ॥

८९



॥ मूर्त्तिचार्य्ये तवनस्य॥ सं
दैवत्यश्रयायत। वर्ज्जय
हनताधिमान्॥ सूपदस्तस्य
दर्शने॥ घनहोमा॥ ॥

१ कोनहासा ॥ मालिद ॥ विकूटि काउँ ग्नलस
नाँ ॥ मसिधू ॥ थकाउँ गालनमालिव ॥ ॥

९८



१ गौंभवति नैऋत्यें ॥ धर्मा
उँपापनासनैत ञ्जूभाईं प्रप
लोहश्री गौभवंतर्नैनरदेत्ती
॥ गौभा ॥

१ सिदवी॥ ॥ शिठ॥ महापवित्र॥

४८



१ मनवनैवाभिनासध॥ यवि
गतथैवच। सत्कायक्षनर
स्युथी॥ निस्नमात्र निर्व र्नै
॥पकबमा वि॥ ॥

पव्रवनालि॥मतिह॰ सिकदयू॰ धनमायू॥ कन
सनपिकुलेपिव॥ सिंकाप॰ स्थानगुछइयू॥ ॥



समद्विसक्नाक्ष्रदं [illegible]
खकछनिबाञ॰ं।दिप॰ तकि
सैपाहिं॥श्रीरामचैत नैसनि॥

॥श्रीगामबन्नु॥लिङ॥ समस्कसन्काषशय॥ इहरव
केहस्कुनै मदय॥ सैयहिदयू॥ ~७ ॥



॥फ्लू ऽ पंप बिडर्वि फ्रस ... गौ
मावाल भवना म धंवहा
नपाहुह्य॥ सनस्वत्याप्रदर्श
नौ॥सनह्वनी॥ ॥

१ सनस्वामी॥ छिड॥ दृष्षदयू॥ महापवित्रहृयू॥ क
स[illegible]हृयू॥ नागनास॥ पाङ्कनहृयू॥ ॥



१ मनसाचिन्ति[illegible] कां [illegible]
तैलस्यडायनं ॥ सर्व्वक[illegible] चौ
वसिद्धि॥ सूर्गौबस्यवद नौ
॥

सेनं व॥ हिद॥ मनन ताव पाकाउ सिद्धि हायव
स तहाय॥ समस्त काउ सिद्धि हायव॥



वर्ष नाहस्त यि॥
ह स्नान गती ताय नाव
ताय्या हनुमन्त देवदं
॥ हनुमन्त॥

ह्व॥ सनदयू

ईङसा ना ... मंगल शि ... वा॥



१ॐ धंगद्व ग मने

नासधेश्राधानि सर्वे

मैव, नावतं वेवदर्शनी॥

नावन॥ ॥ ७ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1626

1.628



1.626